मैत्रेयी पुष्प के उपन्यास 'विजन' में नारी चेतना

डॉ. कमलेश, हिन्दी विभाग
राजकीय महाविद्यालय, अम्बाला छावनी।

विज्ञान के नवीनतम आविष्कारों, विकसित तकनीकों तथा ऐतिहासिक अनुभवजनित सांस्कृतिक मूल्यों के साथ, आदिम युगों से चलकर इक्कीसवीं सदी के सूचना क्रांति युग तक पहुंचा आज का विश्व समाज शक्ति, प्रकृति-सृष्टि तथा स्वतन्त्रता-समानता-मानवाधिकार के बीच स्थित अन्तर्सम्बन्धों अथवा अन्तर्द्वन्द्वों को चाहे जिस रूप में विश्लेषित या व्याख्यायित करें, सृजन कालजयी प्रतीक - 'स्त्री' के सम्बन्ध में उसकी मान्यता आज भी पुरातन है, केवल समकालीन संदर्भों में उसकी उपस्थिति बदली है। सेक्स, संतति और निजी सम्पत्ति के त्रिकोण के बीच, पुरुष सत्तात्मक सामाजिक व्यवस्थान्तर्गत शोषण, उत्पीड़न और अपमान का दंश झेल रही भारतीय नारी को कब और कैसे अपने अभिशप्त जीवन से मुक्ति मिलेगी, यह एक यक्ष प्रश्न है।

आधुनिक समय में, बीसवीं सदी के प्रारम्भ से साठ-सत्तर के दशक तक का आकलन करें, तो हमारा समाज पुरुषवादी रहा है। उसके बाद के समयों में, यहाँ तक कि उत्तर आधुनिकता के दौर में भी, पुरुष नियामक सत्ता स्त्रियों पर दबाव बनाए हुए रही हैं, पर समाज के संस्कार और मानसिकता में रूढ़ियों के मकड़जाल भी कम नहीं रहे हैं। इसलिए रूढ़ियों व अन्धविश्वासों के हाथों स्त्रियों का शोषण अप्रतिहत रूप से होता रहा है न केवल अशिक्षित स्त्रियों का वरन् पढ़ी-लिखी सुशिक्षित स्त्रियाँ भी इस विरोध शोषण दमन से रहित नहीं रही हैं। इस वर्चस्वधारी समाज में, जहाँ विरोध का स्वर भी उठाना असम्भव था, वहाँ विद्रोह की तो कोई सम्भावना ही नहीं थी।

पुरुष प्रधान समाज ने नारी को आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक स्तरों पर कष्ट दिए हैं। नारी जीवन से जुड़ी समस्याओं को 21वीं शती की महिला लेखिकाओं ने अपने साहित्य के माध्यम से प्रकट किया है। उत्तर आधुनिकता अंग्रेजी के पोस्ट मॉर्डिनिज्म का हिन्दी पर्याय है। स्त्री-विमर्श, मूल्य विघटन-विमर्श, सत्ता-विमर्श, शिक्षा-विमर्श, बाज़ार-विमर्श और कला-विमर्श आदि उत्तर आधुनिकता की देन हैं। आज ऐसे बहुत से साहित्यकारों का उदय हुआ है, जिन्होंने समाज में व्याप्त परिस्थितियों को देखा और समझा तथा समय की माँग को ध्यान में रखते हुए अपनी लेखनी का सही उपयोग किया है। बहुत से

ऐसे लेखक और लेखिकाएँ है, जिन्होंने अपने साहित्य में स्त्री को स्थान दिया है। इन लेखिकाओं में मैत्रेयी पुष्पा का स्थान उल्लेखनीय है। इनके अब तक के समूचे कथ्य साहित्य में नारी अपनी अस्मिता और अस्तित्व के लिए संघर्ष करती दिखाई देती हैं। यह संघर्ष समाज से है, रूढ़ियों से है, थोपी गई परम्पराओं से है और पुरुष की अहं में लिपटी मानसिकता से है। मैत्रेयी जी के कथा जगत् की नारियां प्राय: ग्रामीण था कस्बाई परिवेश की हैं, जहाँ शिक्षा नहीं है, आधुनिक तकनीक नहीं है और उन्हें बासी मानसिकता से बाहर निकालने वाला कोई को पथ-प्रदर्शक नहीं है। मैत्रेयी जी के कथा जगत् की नारियाँ स्वयं ही अपनी लड़ाई लड़ती हैं और पुरुष के वर्चस्व को तोड़ने का प्रयास करती हैं। अत: कहा जा सकता है कि स्त्री समकालीन विचार चिंतन है। समकालीन उपन्यासों में स्त्री विमर्श मुख्यतः नज़र आता है।

आज 'स्त्री-विमर्श 'हिन्दी साहित्य में चर्चा का विषय बना हुआ है, जिस पर मनोवैज्ञानिक, समाज शास्त्रीय, राजनीतिक, वैधानिक और मानवीय दृष्टि से बहस हो रही है। स्त्री विमर्श एक ओर नारा है, दूसरी और टंकार तो तीसरी और गम्भीर चिंतन और चिन्ता का विषय बना हुआ है। आज नारी अपने अस्तित्व की सुरक्षा के लिए परम्परागत मूल्यों से लड़ रही है। समकालीन हिन्दी साहित्य में नवें दशक की लेखिकाओं में यथार्थ की छटपटाहट कहीं बूंद, कहीं नदी के रूप में, तो कहीं सागर जैसे गहरे रूप में व्यक्त हुई है। ये लेखिकाएं समझ रही हैं कि अब नारी भोग्य नहीं हैं। वह भी हाड-मांस की बनी हुई एक सक्रिय प्राणी है। वह भी पुरुष की तरह जीने की अधिकारिणी है। थोथे आदर्शवाद और सड़ी-गली परम्पराएँ नारी जीवन को दयनीय बना रही हैं। आज की नारी का सामाजिक, धार्मिक, मानसिक, पारिवारिक एवं शारीरिक घरातल पर शोषण हो रहा है। उस शोषण से नारी को मुक्त करने के लिए कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, शिवानी, अग्निहोत्री, नासिरा शर्मा, प्रभा खेतान, राजी सेठ, उषा प्रियंवदा, मैत्रेयी पुष्पा आदि लेखिकाओं ने अनेक संघर्षशील नायिकाओं को चित्रित किया है। इन लेखिकाओं की नारियाँ आँचल में दूध और आँखों में पानी लेकर नहीं बढ़ती। इनके साहित्य की नारी अंगारों के बीच दहकती है। स्त्री धीरे-धीरे महसूस करने लगी है कि इंसान रूप में उनका भी एक निजी व्यक्तित्व है। इनमें मैत्रेयी पुष्पा के उपन्यासों 'अल्मा कबूतरी', ‘चाक', 'इदन्नमम्', 'बेतवा बहती रही’, 'विजन' में नारी जीवन से जुड़ी समस्याओं को प्रस्तुत किया गया है। मैत्रेयी पुष्पा आधुनिक हिन्दी उपन्यास की सशक्त हस्ताक्षर है।

'विजन' उपन्यास में मैत्रेयी पुष्पा ने चिकित्सा के क्षेत्र में कार्यरत सक्रिय महिलाओं के प्रति समाज और परिवार के नजरिये का अन्वेषण किया है। इस उपन्यास के माध्यम से मैत्रेयी जी ने वर्तमान मानव की द्वन्द्वात्मक और संघर्षपूर्ण जिन्दगी के बीच एक स्वस्थ दृष्टिकोण के अपेक्षा पर भी प्रकाश डाला। इस विषय के परिप्रेक्ष्य में विजन में स्त्री विमर्श की अवधारणा का विश्लेषण प्रस्तुत है। यह उपन्यास जनवरी, 2002 में प्रकाशित हुआ। यह उपन्यास 'मेडिकल फील्ड' अर्थात् नेत्र-चिकित्सा के क्षेत्र पर केन्द्रित है। इसमें लेखिका ने डाक्टरों के इर्द-गिर्द घूमती अखिल आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के नेत्र विभाग में होने वाले घोटालों की कहानी को वर्णित किया है। इसमें नेत्र चिकित्सा से जुड़े डॉक्टरों की जिन्दगी का यथार्थ चित्रण किया है। इसमें स्त्री मन की व्यथा, आत्मग्लानि, कुण्ठा, पीड़ा आदि देखने को मिलती है। 'विजन' उपन्यास में नारी की बदलती मानसिकता जगह-जगह देखने को मिलती है।

मैत्रेयी पुष्पा ने नारी पात्रों के माध्यम से एक चेतन आधुनिक नारी का चित्रण किया है जो परम्परावादी विचारधाराओं का विरोध करती है तथा पुरुषवादी सोच के आगे डट कर खड़ी होती है। उपन्यास में वर्णित आभा दी विवाह जैसे बंधन को परम्परावादी मानकर ठुकरा देती है और खुद के व्यक्तित्व को निखारकर नेहा को भी समझाती है, "अपनी उस माँ जिसने तुम्हें अभाव झेलकर, मुश्किलें सहकर, कई विरोधों को पार करके पढ़ाया-लिखाया - उस माँ को तीन नाम- रसाई दाईन, धोबिन, मोचिन देकर अपने राजमहल लौट जाओ, वह भी तुम जैसी बेहया और अहसान फरामोश लड़की से मुक्ति पाएं। शेम टू यू। शेम फुल टू अस आभा दी ने कहा है।"[1] इस तरह आभा खुद अपने फैसले लेने के लिए चेतन है और नेहा को भी अपने फैसले लेने तथा खुद को संभालने की बात करती है।

नेहा उपन्यास में पुरुषवादी सोच से भली भांति अवगत हैं कि पुरुष नारी को मात्र एक भोग की वस्तु मानता है और उसका उपयोग अपने लाभ को देखकर करता है। इसकी अभिव्यक्ति उपन्यास में इस प्रकार मिलती है। नेहा शरण डाक्टर पति से ब्याही जाती है। डॉक्टर पति दहेज में किसी चीज की माँग नहीं करता, उन्हें एक होनहार डॉक्टर बहु की आवश्यकता होती है। "मत करो, मुझसे कोई आशा। मैं सब समझती हूँ। वे चालाक लोग हैं। अपने चंगुल में लेना चाहते हैं। नहीं तो उनके बेटे के लिए एक मामूली घर की लड़की, वह भी दूसरे शहर की ....मरवाने या बहकाने की अनेक तरकीबें हैं। मैं तरकीबों में नहीं फंसूंगी मम्मी वे पैसे की चमक दिखाकर मुझे और मेरे माता-पिता को हिप्नोटाईज करना चाहती है।"[2] इस प्रकार आज की

नारी के कदम भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं, जिसमें वह एक नई व्यवस्था निर्माण एवं स्त्री पुरुषों के समानता है। वह परम्परागत मान्यताओं, धारणाओं और नैतिकता के नियमों को नकारने लगी है।

नेहा एक होनहार डॉक्टर है और उसकी शादी डोनेशन से प्राप्त की गई डिग्री वाले डॉ. अजय से हुई है। सफल सर्जन होने पर भी ससुराल में उसे आई सेंटर की रिसेफ्शनिस्ट बनाया जाता है। घर-परिवार के लिए अपनी डॉक्टरी भी अधूरे में छोड़ देती है। दूसरी ओर इसी पेशे से जुड़ी डॉ. आभा निडर एवं साहसी स्त्री है। वह अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाती है। डॉ. आभा में स्त्री विमर्श कई स्थानों पर देखने को मिलता है। जब उसे कि डॉ. चोपड़ा मरीज़ की आँख में घटिया लेंस का प्रयोग करते हैं, तो वह इसका विरोध करती है। वह कहती है- “सर्जरी मैंने की है, लेंस की च्वाइस मेरी ही होगी, न आप कौन कि खामख्वाह।"[3] अतः कहा जा सकता है कि आभा के ये संवाद विद्रोह की स्थिति को प्रकट करते हैं। वह डॉ. चोपड़ा से इस बात का विरोध करती है। उसके स्वर में स्त्री-विमर्श जगह-जगह देखने को मिलता है। वह एक ऐसी स्त्री के रूप में हमारे समक्ष उभरकर सामने आती है, जो निर्णय लेने में सक्षम है। पति के साथ मार-पीट पीट होने के बाद वह तलाक लेने का निर्णय लेती है।

अस्पतालों में भी स्त्री का शोषण खत्म नहीं होता है। आज भी अस्पताल में मरीज के रूप में स्त्री के साथ डॉक्टर बलात्कार करने की कोशिश करते हैं। सभी उस बलात्कारी डॉक्टर का साथ देते हैं, लेकिन डॉक्टर आभा इसका विरोध करती है और बलात्कारी महिला का साथ देकर बलात्कारी डॉक्टर को सज़ा दिलवाने का संकल्प लेती है। उसे अनेक प्रकार की मुसीबतों का सामना करना पड़ता है, लेकिन वह पीछे नहीं हटती है। वह निराश जरूर होती है, लेकिन अन्याय का सामना करती है। वह कहती है, “मेरा निराश मन कहता है, और रहेगी, तब तक बलात्कार रहेगा। हाँ, इतना ज़रूर है, वह लड़-लड़कर हारेगी। हार-हार कर जीतेगी या नहीं, मगर लड़ती रहेगी।”[4] डॉ. आभा द्विवेदी अपने अस्तित्व के लिए लड़ना अनिवार्य समझती है। जिस सरोज नामक महिला का बलात्कार होता है, वह उससे कहती है, “में इस घटना का पर्दाफाश करूँगी। घबराओ मत। चलो मेरे साथ, अभी, इसी समय, इसी हालत में।”[5] इस प्रकार एक चेतना नारी के रूप में नेहा सही का साथ देती है और गलत के खिलाफ डटकर विरोध करती है।

इस प्रकार सारांश में कहा जा है कि प्रस्तुत उपन्यास में आभा और नेहा जैसी आधुनिक शिक्षा प्राप्त लड़कियों के द्वन्द्व को उजागर किया गया है। आधुनिक शिक्षा प्राप्त नारी को स्त्री होने के नाते आगे बढ़ने के रास्ते गँवाने पड़ते हैं और अपनी प्रतिभा को कुंठित करना पड़ता है। लेखिका हमें वर्तमान सामाजिक

विद्रूपताओं को देखने की दृष्टि प्रदान करना चाहती है। उन्होंने नारी शोषण, नारी संघर्ष, नारी का साहस तथा नारी चेतना को 'विजन' के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उनकी नारी पात्र अन्याय, अत्याचार का विरोध करने वाली है तथा इससे मुक्ति के लिए संघर्षरत भी हैं और रूढ़ि परम्पराओं को तोड़कर अन्याय, अत्याचार का विरोध करती है तथा अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व के निर्माण के लिए स्वयं के द्वारा निश्चित किए मार्ग पर चलकर अपने जीवन को सुखमय बनाती है।

सन्दर्भ :

1 मैत्रेयी पुष्पा, विजन, पृ. 141

2 वही, पृ. 75

3 वही, पृ. 174

4 वही, पृ. 156

5 वही, पृ. 152